चैंपियन बनने से पहलेः भारत की खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का मौका दे रहा वेदांता

भास्कर समाचार सेवा

नई दिल्ली। चैंपियन का सफर अक्सर पोडियम से शुरू नहीं होता। मेडल, राष्ट्रीय जर्सी या स्टेडियम में गूंजती तालियों से बहुत पहले, एक छोटा-सा पल आता है—जब कोई बच्चा पहली बार किसी खेल को जानता है, कोई कोच उसकी प्रतिभा को पहचानता है, या किसी युवा खिलाड़ी को ऐसा प्रशिक्षण और अवसर मिलता है, जो उसके पूरे सफर की दिशा बदल सकता है। लाखों युवा भारतीयों के लिए सिर्फ प्रतिभा होना ही हमेशा काफी नहीं होता। सही खेल सुविधाएं, कोचिंग, मार्गदर्शन और प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के मौके न मिलने पर उनकी प्रतिभा सामने नहीं आ पाती। यह समस्या खासतौर पर उन समुदायों में ज्यादा है, जो लंबे समय से भारत की मुख्य खेल व्यवस्था से दूर रहे हैं। जैसे-जैसे भारत एक वैश्विक खेल महाशक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, सवाल सिर्फ ज्यादा चैंपियन तैयार करने का नहीं है। जरूरी

यह भी है कि ऐसे मजबूत अवसर और रास्ते बनाए जाएं, जिनसे प्रतिभाशाली युवा शुरूआत से ही आगे बढ़ सकें। राजस्थान, गोवा, ओडिशा, झारखंड और भारत के अन्य राज्यों में वेदांता इस चुनौती को दूर करने के लिए फुटबॉल, तीरंदाजी, एथलेटिक्स, मैराथन, मार्शल आर्ट्स, नए तरह के खेल और पैरा-स्पोर्ट्स से जुड़े कार्यक्रम चला रहा है। इन कार्यक्रमों से करीब 3 लाख लोगों तक पहुंच बनाई गई है। इनका मुख्य उद्देश्य खेल के अवसरों को लोगों और समुदायों के करीब लाना, ज्यादा से ज्यादा लोगों को खेलों से जुड़ने का मौका देना और प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को आगे बढ़ने में मदद करना है। सिर्फ खेल का मैदान नहीं, आगे बढ़ने का रास्ता भी खेल में हिस्सा लेने और बेहतर खिलाड़ी बनने के बीच का अंतर इस बात से पड़ता है कि किसी युवा को अपनी प्रतिभा पहचानने के बाद कितना सही मौका और मार्गदर्शन मिलता है। खेल का मैदान किसी बच्चे को खेल से जोड़ सकता है। लेकिन अच्छी कोचिंग, प्रतियोगिताओं में खेलने का मौका, सही मार्गदर्शन और लगातार अभ्यास उसकी प्रतिभा को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं। वेदांता के फुटबॉल कार्यक्रम दिखाते हैं कि लंबे समय तक सही तरीके से काम करने से युवा खिलाड़ियों को आगे बढ़ने के बेहतर मौके मिल सकते हैं। गोवा में सेसा फुटबॉल अकादमी, जिसकी शुरूआत 1999 में हुई थी, कई वर्षों से युवाओं को सही प्रशिक्षण और खेल के विकास के अवसर दे रही है। अब तक अकादमी से 8,000 से ज्यादा छात्र जुड़े हैं और 230 से अधिक पेशेवर फुटबॉल Sensitivity: Internal C3 खिलाड़ी तैयार हुए हैं। यह दिखाता है कि खेलों में लगातार निवेश और सही व्यवस्था से अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। वित्त वर्ष 2025-26 में अकादमी ने गोवा महिला लीग भी जीती, जिससे महिलाओं के लिए फुटबॉल में आगे बढ़ने के अवसरों को और बढ़ावा मिला। राजस्थान में जिंक फुटबॉल अकादमी युवा खिलाड़ियों को आगे बढ़ने के लिए बेहतर अवसर दे रही है। वित्त वर्ष 2025-26 में अकादमी ने अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ के साथ मिलकर जावर में भारत की पहली आवासीय लड़कियों की फुटबॉल अकादमी शुरू की। इस अकादमी को 3-स्टार मान्यता भी मिली है। ऐसी पहल का महत्व सिर्फ युवाओं को खेलने की जगह देने तक सीमित नहीं है। खासकर लड़कियों और उन समुदायों के युवाओं के लिए, जहां संगठित खेलों तक पहुंच कम है, एक सही तरीके से चलने वाली अकादमी उन्हें नियमित प्रशिक्षण लेने, बड़े स्तर की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने और खेल में अपना भविष्य बनाने का मौका देती है। जहां प्रतिभा है, वहीं उसे पहचानना भारत की कई बेहतरीन खेल प्रतिभाएं ऐसे समुदायों से आती हैं, जहां सुविधाओं और अवसरों की कमी के कारण प्रतिभा को आगे बढ़ने का पूरा मौका नहीं मिल पाता। ओडिशा और झारखंड में वेदांता के तीरंदाजी कार्यक्रम युवाओं और स्थानीय समुदायों के करीब सही प्रशिक्षण और खेल के बेहतर अवसर पहुंचाने में मदद कर रहे हैं। इन क्षेत्रों में तीरंदाजी की पुरानी और मजबूत स्थानीय परंपरा भी है। ओडिशा के लांजीगढ़ में इस कार्यक्रम ने संजय माझी के खेल सफर में मदद की है। वे 6 बार स्वर्ण पदक जीत चुके हैं और ओडिशा की ओर से 2 बार राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। वहीं, इंएसएल स्टील आर्चरी अकादमी में सही कोचिंग और प्रतियोगिताओं में खेलने के अवसरों ने युवा खिलाड़ियों को आगे बढ़ने में मदद की है। इनमें कृतिका कुमारी भी शामिल हैं, जिन्होंने मार्च 2025 में एनटीपीसी 14वीं मिनी नेशनल चैंपियनशिप में राष्ट्रीय स्वर्ण पदक जीता। वेदांता ने सखी काले सहित कई पैरा-एथलीटों को भी सहयोग दिया है। सखी काले गोवा के उसगांव की पुरस्कार विजेता दृष्टिबाधित पैरा-एथलीट हैं। वेदांता ने प्रसिद्ध भाला फेंक खिलाड़ी देवेंद्र झाझरिया को भी समर्थन दिया है। इसके अलावा, हिंदुस्तान जिंक के माध्यम से वेदांता अल्ट्रा-डिस्टेंस रनर सुफिया सूफी को भी सहयोग देता है। ये कहानियां भारत के खेल क्षेत्र की एक अहम बात बताती हैं: प्रतिभा हमेशा पैदा करने की जरूरत नहीं होती। अक्सर उसे खोजने, निखारने और आगे बढ़ने का मौका देने की जरूरत होती है।